हिन्दुत्व : सत्य, स्वत्व और सत्त्व

डॉ. मनमोहन वैद्य

पंचनद शोध संस्थान

चण्डीगढ़

PANCHNAD RESEARCH INSTITUTE
CHANDIGARH

GOVERNING BODY - 2010-12

PATRONS

1. Dr B L Gupta, C-30, Ahinsa Vihar, Sector 9, Rohini Delhi (011-64558472) mangalayan@gmail.com
2. Shri Dina Nath Batra, 1-17, Sarswati Bal Mandir, GD Block, Nariana Vihar, . Delhi-110028. (M 098111 26445) dina_nathbatra@hotmail.com

CHAIRMAN

3. Shri Shyam Khosla, A-208, Surajmal Vihar, Delhi-110092 (011- 22374816) shyamkhosla@gmail.com

DIRECTOR

4. Prof B K Kuthiala, Vice Chancellor, MLCNL of Journalism & Mass Communication, E-2,/163, Arera Colony, Bhopal, M 097525 34999 kuthialabk@gmail.com

VICE CHAIRMEN

5. Dr. Bhim Sen, Sen Nursing Home, Katra Sher Singh, Amritsar 143001 (0183-2544567) M 98724 24456 grays2rads@hotmail.com
6. Dr. K S Arya, 866, Sector 4, Panchkula 134109 (0172-2560570) M 94172 31133 krishan.s.arya@gmail.com
7. Dr. Ajay Kumar, B-62, Anand Vihar, Delhi-110092 (011-22145980) M 98110 40985 ajaykge@hotmail.com
8. Prof. Chaman Lal Gupta, M 94181 41898 clgupta@yahoo.in

GENERAL SECY

9. Dr. Rajneesh Arora, Vice Chancellor, Punjab Technical University, 434, Mota Singh Nagar, Cool Road, Jalandhar M 097790 22121 rajneesh.ptu@gmail.com

SECRETARIES

10. Shri Keshav Khurana, Flat 3, I Block, Unicity Mystic Homes, Zirakpur, Patiala District. M 09417421289 k.khurana@yahoo.co.in
11. Dr. O.P. Pahuja 41-A/A2B, Pashchim Vihar, Delhi-110063 (011-5261406) M 98188 56830 omprakash.pahuja@gmail.com
12. Shri Ashok Malik, 1086/44-B, Chandigarh 160044 (0172-2612774) 98146 40774 ashokmalik@gmail.com
13. Shri Jasbir Singh Rathi, Advocate, 60, Old Housing Board Colony, Panipat 132103 R 2696043 M 094160 16034 js_rathi@yahoo.co.in

TREASURER

14. Shri Rakesh Sharma, 1261, Sector 33-C, Chandigarh (0172-2664458) M 98150 10200 rakeshsharma69@gmail.com

MEMBERS

15 Dr H S Bedi, 125, Kabir Park, P.O. Khalsa College, Amritsar, (0183-2258774) M 093561 33685

16. Shri Arun Mehra, 449/10, Dhab Khatikan, Amritsar, 143001(R 0183-25450403) M 094170 62796 dr.arun_mehra@yahoo.co.in
17. Shri Vikram Arora, CA, 2, Tagore Park, Near Mqsudan, Jalandhar R 2670647 O 2338330 M 9814166330 arora.vikram@yahoo.com
18. Dr Kulbhushan Chandel, Nirmal Bhawan Sandal Chakar Shimla-5 R 0177- 2832260 M 09418 074081 kulbushanchandel@gmail.com

SPECIAL INVITEES

1. Shri R S. Sharma,1037, Sector 7, Panchkula, R 0172-2596940 M 093120 83031.
2. Shri Rishi Goyal, Director, Gita Awasyee Vidyalaya Railway road, Kurukshetra (01744-291887) M 94160 36887 rishi.goel@Indiatimes.com

Chairmen and Secretaries of all Panchnad Study Centres are ex-officio members of the Governing Board.

प्राक्कथन

सर्व मान्य तथ्य है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता में ऐसी संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ था जिसने इस सृष्टि और ब्रम्हांड की वास्तविकता को समझा था। अनेकों ऋृषियों और मुनियों ने प्रकृति के पूर्ण सत्य को समझकर उसे न केवल वेदों, पुराणों और उपनिषदों के रूप में प्रस्तुत किया, परन्तु ऐसी जीवनशैली भी मनुष्य जाति को दी जो प्रकृति के नियमों के अनुसार चलते हुए मनुष्य को वास्तविक विकास की ओर अर्थात पूर्ण मुक्ति की ओर ले जाती है।

सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियों के बदलने के साथ इस श्रेष्ठ संस्कृति का विस्मरण हुआ और जीवनशैली प्रदूषित हुई। कुछ समय के लिए मुगलों द्वारा विशेष प्रकार की आस्थाओं का प्रचार व प्रसार हर प्रकार के उपाय से किया गया। 18वीं शताब्दी के बाद यूरोप का प्रभाव बढ़ना प्रारंभ हुआ। इस पूरे संकटकाल में भारत के महापुरूषों ने प्राचीन संस्कृति को किसी न किसी रूप में जीवित रखकर उसके विस्तार का प्रयास किया। मुगलों और अंग्रजों की दासता ने अपरिपक्व, अधूरी व गलत जीवन दर्शन का पोषण किया। 'मैं भी' के स्थान पर 'मैं ही' के विचार का प्रतिपादन हुआ।

भारतीय समाज ने संगठित होकर विदेशियों की अधीनता को चुनौती दी। महर्षि अरविन्द, विवेकानन्द जैसे अनेक महापुरूषों ने हिन्दू दर्शन पर आधारित जीवन के महत्व को आमजन तक पहुंचाया और विदेशी दासता से मुक्ति पाने के लिए प्रेरित किया। पूरे स्वतंत्रता आन्दोलन में आजाद होने का आधार स्वशासन व स्वदेशी विचार व व्यवहार रहा। स्वतंत्रता के पश्चात् मुक्त बौद्धिक चिन्तन प्रारंभ हुआ और विदेशी संस्कृतियों का तथ्यात्मक आकलन हुआ। प्राचीन भारतीय संस्कृति को नये प्रकाश में समझा गया। जिस बुद्धिजीवी ने भी तटस्थ भाव से तथ्यात्मक विश्लेषण किया उसने यही पाया कि भारतीय जीवन मीमांसा ही पूर्ण सत्य पर आधारित है इसलिए श्रेष्ठतम है। इस विचार को जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। गत 26 वर्षों से पंचनद इस प्रकार के वैचारिक संवाद के कार्य में लगा है।

पंचनद शोध संस्थान द्वारा जालंधर, पंजाब में प्रेरणा शिविर (15–16 जनवरी 2011) का आयोजन किया गया। उत्तर भारत के 27 स्थानों से 130 बुद्धिधर्मी सहभागी थे। डॉ. मनमोहन वैद्य का उद्घाटन समारोह में उद्बोधन हुआ। विषय था हिन्दुत्वः सत्य, स्वत्व और सत्त्व । डॉ. वैद्य ने भारतीय संस्कृति की संपूर्णता को आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत किया है। इस उद्बोधन को समाज के सामने प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है।

पंचनद शोध संस्थान द्वारा जालंधर, पंजाब में प्रेरणा शिविर (15–16 जनवरी 2011) का आयोजन किया गया। उत्तर भारत के 27 स्थानों से 130 बुद्धिधर्मी सहभागी थे। डॉ. मनमोहन वैद्य का उद्घाटन समारोह में उद्बोधन हुआ। विषय था हिन्दुत्वः सत्य, स्वत्व और सत्त्व । डॉ. वैद्य ने भारतीय संस्कृति की संपूर्णता को आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत किया है। इस उद्बोधन को समाज के सामने प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है।

प्रो. बृज किशोर कुठियाला

निदेशक

हिन्दुत्व : सत्य, स्वत्व और सत्त्व

एक बार कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ रहे एक विद्यार्थी ने अपने परिचय में बताया ''वह छोटी कहानियां लिखता है।'' 'कैसी छोटी कहानियां? पूछने पर उसने मुझे हाल में लिखी एक छोटी कहानी सुनाई। चुनाव चल रहे थे, इसलिए उसकी कहानी का विषय भी चुनाव ही था। कहानी थी –

एक राज्य में चुनावों की घोषणा हुई। चार उम्मीदवारों ने पर्चे दाखिल किए। ये उम्मीदवार थे वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण और अन्न प्रदूषण। चारों उम्मीदवारों ने एक ही चुनाव चिन्ह 'मनुष्य' की मांग की। चुनाव अधिकारी चक्कर में पड़ गया। चारों एक ही चुनाव चिन्ह क्यों चाहते थे? कायदे से एक चुनाव चिन्ह किसी एक उम्मीदवार को ही दिया जा सकता था। चुनाव अधिकारी ने उन चारों को एक साथ बुलवाया। उन्हें अपनी समस्या बताई। हल ढूंढने के लिए उसने उम्मीदवारों से अपना–अपना पक्ष रखने को कहा कि वे 'मनुष्य' चुनाव चिन्ह ही क्यों चाहते थे? साथ ही उन्हें यह भी स्पष्ट कर दिया कि जिसका प्रतिपादन सबसे अधिक प्रभावी होगा उसे 'मनुष्य' चुनाव चिन्ह आबंटित कर दिया जाएगा। अन्य उम्मीदवारों को कोई दूसरे चुनाव चिन्ह चुनने होंगे। हर एक ने कहा कि मनुष्य ने ही उसे जन्म देने, पालन करने और उसे विकसित करने का उस पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मनुष्य ही उसके अस्तित्व का मूल कारण है। इसलिए केवल वही 'मनुष्य' चुनाव चिन्ह पाने का हकदार है।

एक मर्मस्पर्शी सत्य को उस विद्यार्थी ने अपनी छोटी सी कहानी में बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत किया था। भूमि, वायु, जल और अन्न के प्रदूषण और उसके दुष्परिणाम स्वरूप विश्व में बढ़ रही उष्णता, इन समस्याओं की चक्की में केवल मानव जाति ही नहीं, सारी दुनिया पीसी जा रही है और इसकी सभी को चिंता है। विडम्बना यह है कि इसके मूल में जो लोग या समुदाय हैं वे अनपढ़, अविकसित या पिछड़े वर्ग के नहीं हैं, वे अपने आप को सबसे विकसित, उन्नत, पढ़े–लिखे और आधुनिक मानने वाले लोग हैं। फिर ऐसा क्यों हुआ? कारण, जिसका उन्हें भी अब एहसास हो रहा है। यह है कि इन (तथाकथित) आधुनिक, सबसे अधिक विकसित, उन्नत और सुशिक्षित लोगों का सृष्टि और मानवता ही नहीं वरन् समग्र जीवन के प्रति दृष्टिकोण खण्डित, गलत और अधूरा था। इसलिए उनकी गाड़ी विकास के नाम पर विनाश की ओर गति से चल पड़ी है।

श्री एस0 के0 चक्रवर्ती ने लिखा है :

The march of modern science & technology derived from it, coincided with an era when the human race was beginning to snap its ties with earth and nature. Enlightened objectivism meant discarding all metaphors and rituals and myths concretizing the man-nature relationship as superstition. A calculative, prediction control attitude becomes the insignia of the progressive and liberated mentality. At this point the real breach occurred. One need not stop for a moment to consider the right or wrong of any action regarding something to which there is no relatedness.

The growth of this superlative consciousness appears to be the most basic explanation for non-ethics in human affairs vis-à-vis nature. No doubt numerous aspects of external physical life benefitted from the sci-tech combination through control & subjugation of matter, air, water, time, distance and so on. Yet, the keynote has been the shift from harmony to highhandedness from awe and reverence to petulance & arrogance.

If man-nature alienation has been the chief cause of unethicality towards ecology and environment, this same alienative ethos began to evade all dimensions of human society. Nation-to- nation, organization-to-organization, man-to-man and similar related networks have increasingly become instrumental to the supreme goal of objective affluence powered by sci-tech engine. Thus, international management conferences today do not encourage any meeting of minds. Secret political and material agenda work beneath the surface-all aimed at running the sci-tech race faster and faster. This process leads to a gradual weakening of ethical sentiments, which are seen to be soft and fuzzy. Not only has nature come to be treated as a resource, as a means, but man too, unethically, emerges as an inherent property of this clever techno-centric outlook.

From tool to machine to automation to chip, this progression seems to have made the human race increasingly less human.

इस रवैये के कारण मनुष्य न केवल प्रकृति से वरन् समाज और संगी–साथियों से भी दूर और अलिप्त सा बनता जा रहा है। परिणामतः वह अपने परिवेश से, अपनों से, परायों से अधिक घमण्डी, अधिक क्रूर और अधिक हिंसक होता जा रहा है। इस प्रकार की मानसिकता वाले समाज ही (तथाकथित) 'विकसित, आधुनिक' समाज और मानव समुदाय हैं। इस प्रगतिशील व विकसित समाज के मूल, कुल, अपरिपक्व ज्ञान और जीवन के बारे में तुलनात्मक रूप से अल्प अनुभव के आधार पर यह समझा जा सकता है कि उनके निष्कर्ष गलत, अधूरे तथा असंगत हैं। जरा सी आंशिक उपलब्धि या ज्ञान के बल पर उनका ये डींगें मारना कि केवल हमने ही वह चरम सत्य पाया है और अब वह केवल हमारे ही पास है, उनकी निरी अपरिपक्वता ही दर्शाता है।

साई मकरन्द दवे ने लिखा है :

''हमारे पुराणों में भगवान सूर्य के सारथी अरुण के जन्म की कथा आती है। कश्यप मुनि की दो पत्नियां थीं, कद्रू और विनता। कद्रू ने अनेक सर्पों को जन्म दिया, विनता ने दो अण्डे दिए। विनता को बताया गया था कि दीर्घ काल के बाद उन अण्डों से दो तेजस्वी व महापराक्रमी पुत्रों का जन्म होगा। जब काफी समय तक कुछ नहीं हुआ तो उसने एक अण्डा फोड़ डाला जिससे एक अपरिपक्व शिशु अरुण का जन्म हुआ। दूसरे अण्डे से यथावकाश उचित समय पर तेजस्वी व महा पराक्रमी गरुड़ का जन्म हुआ। अरुण ने अपनी मां को उसे अण्डे से अपरिपक्व अवस्था में बाहर निकालने के लिए शाप दिया। गरुड़ ने विनता को इस शाप से मुक्ति दिलाई।''

''अरुण अपरिपक्व प्रकाश की आभा का प्रतीक है। यह मनुष्य जीवन की वह स्थिति है जहां अज्ञान का अन्धकार पूरा दूर नहीं हुआ है और ज्ञान का सूर्य क्षितिज पर पूरी तरह प्रकट नहीं हुआ है। मनुष्य की अज्ञान रूपी रात्रि का पूर्ण विलय नहीं हुआ है तथा साक्षात्कार का सूर्योदय अपने प्रखर तेज से गहरी अनुभूति कराते हुए प्रत्यक्ष नहीं हुआ है, ऐसी यह अवस्था है। इस स्थिति में यदि कोई मनुष्य अधीरता से यह समझकर बैठ जाए कि उसे सब कुछ प्राप्त हो गया है तब उसे मुक्ति प्राप्त करने के स्थान पर वापस बन्धन में ही गिरना पड़ेगा। अतएव अरुणोदय, यह प्रशान्त श्रद्धा की और शान्त तथा दृढ़ता से

उपासना करने की वेला है। यह 'मुझे जीवन में सब कुछ प्राप्त हो गया' ऐसे आनन्दातिरेक में चारों ओर नाचने की वेला नहीं है और यदि कोई इस सन्धि वेला में खुशी से नाचने–कूदने लगे और छत के ऊपर चढ़ कर दुनिया को चिल्ला कर कहने लगे 'मैंने चरम सत्य जान लिया' तब उसकी स्थिति अरुण जैसी ही होगी। वह या तो भ्रम के गर्त में गिरेगा या दूसरों को बिल्कुल गलत दिशा में ले जाएगा।''

इसी प्रकार जो (तथाकथित) 'उन्नत–विकसित' समाज अथवा राष्ट्र पूर्णसत्य की उपलब्धि हुई नहीं–केवल उसकी थोड़ी सी झलक मिल गई के बावजूद 'मुझे पूर्णसत्य की उपलब्धि हो गई' ऐसी शेखी बघारते हुए संसार भर में अपना रौब गांठते हुए दिखते हैं तब अर्धविकसित अरुण का स्मरण होता है।

एक बार इन (तथाकथित) प्रगतिशील समाजों के अगुवाओं का यह रवैया तो फिर भी समझ में आ सकता है लेकिन समस्या केवल यही नहीं है। असल समस्या तो उनकी अपने आग्रह के प्रति जिद और उग्रता है कि उनका अधूरा और गलत प्रतिपादन ही चरम् सत्य है और उसे सभी को स्वीकारना ही है। और भी अहम् बात यह है कि इस अधूरे, आंशिक सत्य के आधार पर उद्भूत, वैश्विक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक चिन्तन और तत्सम्बन्धी व्यवस्थाओं को दुनिया भर से स्वीकार करवाने के लिए जो हिंसा, उत्पीड़न और संघर्ष करने पड़े, उन सब को उचित ठहराना और अपना वर्चस्व प्रस्थापित करना।

विनिन परेरा और जेरेमी सीब्रुक का मानना है :

The Western technological and scientific system that developed in symbiosis with its colonial expansion underpinned and made more efficient the process of expropriation. The unsustainability and injustice of this project can now be seen, though at the time of the "discovery" of distant lands and new trade routes, neither moral nor ecological limits to the accumulation of wealth occurred to them, mainly as a result of the cultural imperatives embedded in the fabric of European society.

The West now claims the moral high ground as it castigates other countries for their failings in human rights, for their inability to control population growth, for their corruption and mismanagement. But the West has attained its apparent pre-eminence only after passing through brutal and merciless phases of human rights abuse, the widespread practice of tyranny and genocide, slavery and colonialism. Without the exploitation of occupied territories, the Industrial Revolution would have been aborted before takeoff. The West's enormous structure of affluence has been constructed upon the sands of unsustainability and injustice.

The word "sustainable" has been eagerly taken up by the West, though its meaning has been radically falsified in the process. It now means sustaining power and privileges where they are already concentrated; a meaning which is quite the reverse of its original intention. This should not really come as a surprise; after all, the colonizing of language is a minor feat, given the more material takeovers, annexations and conquests on which the West has prided itself for several hundred years.

The only way in which Third World countries may possibly develop in the Western manner is to be as ruthless and exploitative as the West has been. But not only are there fewer nations to exploit today, and no new lands to "discover", invade and colonize, but those who have been the earlier beneficiaries of such enterprise would be the first to protest that emulative actions are crimes against humanity which must be punished.

(It should be noted that the term"West" does not refer solely to any geographical region, neither does it include all the people there. It refers mainly to the agents of Western-style development, in the West or elsewhere, particularly the TNCs, the politicians and academics. Their beneficiaries encompass much of the populations of the West, knowingly or unwittingly, with the exception of perhaps the impoverished.)

ऐसे मार्ग पर चलते हुए क्या ऐसे (तथाकथित) उन्नत, विकसित और आधुनिक समाज अपनी सारी समस्याएं हल कर चुके हैं? नहीं, ऐसा अभी कहीं भी नहीं दिखाई देता है। चहुंमुखी समृद्धि और सम्पन्नता के बावजूद शान्ति, सुख और सन्तुष्टि की झलक भी कहीं नहीं है। मन अभी भी अशान्त है। ये उन्नत समाज, इसके सामाजिक, पारिवारिक व मानसिक दुष्परिणाम झेल रहे हैं लेकिन उन्हें इससे बाहर निकलने का मार्ग भी नहीं सूझ रहा है क्योंकि उनकी विश्व, सृष्टि, समाज और व्यक्ति की धारणा अपूर्ण, विकृत, सतही और गलत है।

फ्रिटजॉफ काप्रा का मानना है :

The paradigm that is now receding, has dominated our culture for several hundred years. During which it has shaped our modern western society and has significantly influenced the rest of the world. This paradigm consists of number of entrenched ideas and values, among them the view of the Universe as a mechanical system composed of elementary blocks, view of human body as a machine, the view of life in society as competitive struggle for existence, belief in unlimited material, economic and technological growth, and last but not the least- the belief that a society in which the female is every where subsumed under the male is one that follows a basic law of nature. These entire assumptions have been fatefully challenged by recent events. And indeed a radical revision of them is occurring.

The new paradigm may be called a holistic world view, seeing the world as an integrated whole rather than a dissociated collection of parts. It may also be called an ecological view, if the term ecological is used in much broader and deeper sense than usual. Deep ecological awareness recognizes the fundamental interdependence of all phenomena and the fact that as individual and societies we are all embedded in (and ultimately depend on) the cyclic process of nature.

Ultimately, deep ecological awareness is spiritual or religious awareness. When the concept of the human spirit understood as the mode of consciousness in which the individual feels a sense of belonging, of connectedness, to the cosmos as a whole, it becomes clear that ecological awareness is spiritual in its deepest essence. It is therefore, not surprising that the emerging new vision of reality based on deep ecological awareness is consistent with the so called perennial philosophy of spiritual traditions.

सत्य

अब जो यह नया वैकल्पिक प्रतिमान (paradigm) हमारे सामने आया है वह वही है जिसे सहस्त्रों वर्ष पूर्व हिन्दू दार्शनिकों और चिन्तकों ने प्रतिपादित किया था। इस चिरन्तन प्रतिमान की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

- ❖ एक ही चैतन्य चर–अचर सबमें व्याप्त है। वही अनेक रुपों में अभिव्यक्त हुआ है।
  विविध दिखने वाले इन रूपों का अन्तःसूत्र एक ही है। विविधता में एकता।
  अनेकता में एकत्व।
  ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
- ❖ सत्य एक ही है और वह नाना नामों से सम्बोधित किया जाता है। उसे नाना मार्गों से पाया जाता है। जिनमें से कुछ दूर हैं तो कुछ पास, कुछ टेढ़े हैं तो कुछ सीधे।
  एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति।
- ❖ यह सृष्टि एक जीवन्त इकाई है जो एक दूसरे से जुड़ी है। उनमें परस्पर समन्वय है न कि संघर्ष। सभी एक दूसरे के पूरक हैं।
  वसुधैव कुटुम्बकम्।
- ❖ प्रकृति मातृस्वरूपा है। पृथ्वी हमारी माता है और हम उसकी सन्तान हैं। अतएव प्रकृति का दोहन तो उचित है, शोषण नहीं।
  माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
- ❖ अर्थ और काम पुरुषार्थ हैं। धर्मसम्मत् मार्ग से उनका अनुसरण करना चाहिए। अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को सीमित कर सादगी और संयम से जीवनयापन करें और अवशिष्ट अर्थ और काम को समाज के हित में लगाएं।
  तेन त्यक्तेन भुंजीथाः ।
- ❖ चर और अचर सभी में ईश्वर का अंश है। मानव शरीर में वह विशेष रुप से

विद्यमान है। अपने प्रयत्नों से इसे और अधिक विकसित और अभिव्यक्त किया जा सकता है। उसके लिए अपने अन्तर्गत और बाह्य प्रकृति का नियमन करते हुए अपने अन्दर के सुप्त ईश्वर का साक्षात्कार करके मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। इस तरह मुक्ति के लिए प्रयास करना, यही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। यह आध्यात्मिक अधिष्ठान ही मनुष्य जीवन, समाज रचना और सामाजिक व्यवस्थाओं का आधार एवं सार है।

वयं अमृतस्य पुत्राः ।

❖ भौतिक समृद्धि प्राप्त करना तथा आत्मा की मुक्ति के लिए प्रयासरत् रहना दोनों महत्व के हैं। इसलिए दोनों को साधने का प्रयास ही जीवन की पूर्णता है।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः ।

❖ पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं तथा समाज की धारणा के लिए दोनों का समान दायित्व तथा महत्व है। अन्तस्थ ईश्वरत्व प्रकट करने तथा मुक्त होने का दोनों को समान अधिकार तथा समान संभावना है।

इस हिन्दू दृष्टिकोण पर आधारित अत्यन्त उन्नत, सुशिक्षित, सुसंस्कारित और समृद्ध–व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन यहां हजारो वर्षो तक फलता–फूलता रहा। अनेक विदेशी यात्रियों ने इसे देखा और लिखा है। सृष्टि और जीवन का यह रहस्य सबसे पहले भारतीयों ने जाना, समझा और दूसरों को बताया है। इसीलिए इसे हिन्दू अथवा भारतीय वैश्विक दृष्टिकोण के नाम से जाना जाता है। आधुनिक पाश्चात्य देश अब इस सत्य को जान कर स्वीकारते हुए उसे सराह रहे हैं। स्वाभाविक ही हिन्दू इससे अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

सृष्टि की रचना का कारण एवं स्वरुप का जो वास्तव है, (reality) उसे 'ऋत' कहा है। वह तो अपनी जगह स्थित है, स्थिर है। उसे जान कर, समझ कर मानव का व्यवहार–आचरण रहेगा तो उसका–मानव का अर्थात आने वाली असंख्य पीढ़ियों का कल्याण होगा। मानव यदि उसे ठीक तरह से नहीं समझेगा या अधूरा–आंशिक रूप से समझेगा तो नासमझी में वह मानव का अकल्याण ही करेगा। इस 'ऋत' को समझ कर उसका किया हुआ वर्णन 'सत्य' है। वह अपने आप में सम्पूर्ण है। भारतीय मनीषियों ने इस 'ऋत' को जान कर, समझ कर यह 'सत्य' सभी को सहस्राब्दियों पहले से बताया। इसलिए इस 'सत्य' को भारतीय अथवा हिन्दू जीवनदर्शन (Hindu view of life) के नाते या हिन्दुत्व के नाम से जाना जाता है।

स्वत्व

इस सर्वांगीण, जैविक, स्पन्दनशील, सुसम्बद्ध और आध्यात्मिक, वैश्विक दृष्टिकोण के प्रकाश में हमारे यहां युगों पूर्व एक जीवन पद्धति विकसित हुई और प्रस्थापित हो कर प्रतिष्ठित हुई। इस वैश्विक दृष्टिकोण को व्यक्तिगत् तथा सामाजिक जीवन में प्रतिबिम्बित और प्रतिष्ठित कर नित्य व्यवहार में लाने के लिए नीतियाँ, व्यवस्थाएं और जीवनमूल्य बनाए गए। इस मूल व्यवस्था को आगे प्रसारित एवं प्रतिष्ठित करने में अनेक लोगों ने अपना सारा जीवन दांव पर लगाया और तपस्या करते हुए समाज में आदर्श मानदण्ड निर्माण किए। इन सभी के परिणामस्वरूप यहां एक अद्वितीय संस्कृति विकसित हुई।

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों समृद्धि जो वृथा मरे वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
यह पशु प्रवृत्ति है कि आप–आप ही चरें,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

– मैथिली शरण गुप्त

इस दृष्टिकोण और जीवन पद्धति को दूसरों के साथ बांटने के लिए हमारे मनीषी, सन्त और संस्कृतिदूत मानव मात्र को जगाने के एकमात्र उद्देश्य से विश्व के कोने–कोने में गए। इन संस्कृतिदूतों द्वारा अपना ज्ञान बांटने और अपना अनुभव साझा करने को अपनाए गए लगन, प्रेम, करुणा, धैर्य, पद्धति और मार्ग भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं हैं। इनमें से किसी ने भी कहीं भी और कभी भी किसी प्रकार के दबाव, बल अथवा हिंसा का सहारा नहीं लिया। यह संस्कृति भारत की अर्थात हिन्दू की पहचान, अभिव्यक्ति बन गई, यही हिन्दुओं का स्वत्व है। यदि हम चाहते हैं कि विश्व के सारे लोग शान्ति से रहें, द्वंद–प्रतिद्वंदों से मुक्त हों, आपस में सद्भावना और सहयोग हो, विविध लोगों में आपस में सुसंवाद तथा भाईचारा हो और परिवेश का संतुलन बना रहे तो सभी को इस समग्र, जैविक और परस्पर सुसम्बद्ध आध्यात्मिक दृष्टिकोण और जीवनपद्धति को अर्थात हिन्दू जीवनपद्धति को अपनाना होगा।

इस 'सत्य' के प्रकाश में उन आधारभूत तत्वों को जीवन में अभिव्यक्त करने के कारण यहां जो एक विशिष्ट जीवन पद्धति (Way of Life) विकसित हुई। वह जीवनपद्धति भारत की, हिन्दुओं की पहचान (Identity) बनी। यह हिन्दू का 'स्व'त्व है। उसका यह स्व यानि हिन्दुत्व (Hinduness) है। हिन्दु का हिन्दुत्व (Hinduness) यह उसका 'स्वत्व' है, जो उसकी संस्कृति के रूप में जाना जाता है। दुनिया भर में फैले हिन्दुओं का यह कर्तव्य है कि इस हिन्दुत्व का यानि 'स्वत्व' का बाह्य आक्रमण से रक्षण करने के साथ–साथ अपने वैयक्तिक–पारिवारिक–व्यावसायिक–सामाजिक जीवन में आचरण करके भी उसका रक्षण करें। हमारी पहचान बनी रहे और वह दुनिया भर को अनुकरणीय लगे, इसके लिए शाश्वत सामर्थ्य निर्माण करना भी 'स्वत्व' रक्षण ही है।

हिन्दु संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं :

❖ माता,पिता,गुरु और अतिथि को देवतास्वरूप मान कर उनका आदर करना चाहिए।

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।

आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।

❖ परिवार के हित के लिए व्यक्ति के हित का त्याग कर दें, ग्राम के हित के लिए परिवार के हित का त्याग कर दें, देश के हित के लिए ग्राम के हित का त्याग कर दें और अपनी मुक्ति हेतु पृथ्वी का ही त्याग कर दें।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्,

ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत।

❖ भूमिपूजा, जलपूजा, दीपपूजा, सूर्य–चन्द्र पूजा, यन्त्रपूजा, शस्त्रपूजा, वास्तुपूजा आदि के द्वारा व्यापकता के भाव से प्रकृति एवं परिवेश के साथ रिश्ता जोड़ना।

❖ उपासना चाहे निर्गुण–निराकार की हो या सगुण–साकार की, दोनों एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं। केवल एक समाज में ही नहीं अपितु किसी एक परिवार में भी उपासना पद्धतियां अलग–अलग हो सकती हैं।

रुचिनां वैचिष्यादृजुकुटिलनाना पथजुषाम् ।

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।।

❖ दूसरों के हित के लिए स्वार्थ त्याग करने वालों को समाज में श्रेष्ठता प्राप्त होती है। दूसरों की तन–मन–धन से सेवा करना तथा दूसरों के सुख से सुखी और दुख से दुखी होना ही सच्चा धर्म है।

❖ हमारी अनन्यतम् विशेषता है 'दैवी शक्ति की नारी रूप में उपासना'। वेद द्रष्टाओं में महिलाओं का भी स्थान उनके भौतिक, आध्यात्मिक ज्ञान का परिचायक है। परस्त्री को माता, पराए धन को मिट्टी और प्राणियों को अपना समझना, यह सनातन धर्म है।

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।

आत्मवत् सर्वभूतेषु एष धर्मो सनातनः।।

- ❖ स्त्री और पुरुष परस्पर पूरक हैं। किसी भी धार्मिक कार्य में पति के साथ पत्नी का होना अनिवार्य है। गोमाता, भूमाता, लोकमाता (नदी), तुलसीमाता शब्दों में मातृस्वरूप इनके प्रति हमारी सर्वोच्च कृतज्ञता का द्योतक है।
- ❖ तीर्थयात्रा, पुण्य और धर्म की अनूठी अवधारणा।
- ❖ पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त।
- ❖ आसपास के पशु–पक्षियों तक को भोजन करा कर स्वयं भोजन करना सदैव से हमारी परिपाटी रही है।

सत्त्व

परन्तु इसके लिए भारत, जो हिन्दुत्व का निधान है, का 'सत्त्व' वर्धन आवश्यक है। विश्व भर में फैले हिन्दू समाज ने अपने 'स्वत्व' को बनाए रख कर दुनिया के सम्मुख उसका उदाहरण प्रस्तुत करने हेतु भारत को,जिसके सभी निवासी, भारत में रहने वाला सम्पूर्ण समाज,राष्ट्रीय अर्थात हिन्दू (not religion) है,अपना'सत्त्व'वर्धन करना अतिआवश्यकहै।

- ❖ यह 'सत्त्व' भारत के सामरिक दृष्टि से शक्ति सम्पन्न और अपराजेय बनने में है। अब तक का अनुभव रहा है कि दुनिया के सारे देशों ने शक्तिशाली बनने पर अपनी शक्ति का उपयोग अपनी सीमाएं बढ़ाने के लिए दूसरे देशों पर आक्रमण करने, उनपर युद्ध लादने, उसका शोषण और लूट–पाट करने में ही किया है। केवल भारत ही ऐसा गौरवपूर्ण अपवाद है जिसने सामर्थ्य होते हुए भी साम्राज्य विस्तार के लिए एक भी आक्रमण नहीं किया। भारत ने युद्ध लड़े पर वह केवल आत्मरक्षण, 'स्वत्व' रक्षण व धर्म स्थापना के लिए। इसीलिए राम और कृष्ण भारतीयों के श्रद्धाभाजन और आदर्श बने जिन्होंने युद्ध किए, विजयी हुए परन्तु कभी भी राज्य विस्तार के लिए नहीं।
- ❖ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और स्वावलम्बी बनना भी भारत का 'सत्त्व' वर्धन है। हम दुनिया से व्यापार, व्यवसाय करेंगे परन्तु स्वावलम्बन की कीमत पर नहीं।
- ❖ हमारी विद्यालयीन और महाविद्यालयीन शिक्षा के उद्देश्य और सामग्री के भारतीय दर्शन पर आधारित होने से वह भारत की आत्मा को अभिव्यक्त करती है। विश्व भर के नए विचारों और उपलब्धियों का तभी स्वागत है जब वे हमारे वृहद् मूल्यवान अनुभव की कसौटी पर खरे उतरें।
- ❖ हमारी सामाजिक व्यवस्थाएं हमारे समग्र, आध्यात्मिक, परस्पर सम्बन्धित हिन्दू दर्शन पर आधारित हों, जहां जीवन स्तर केवल आर्थिक मापदण्डों पर ही आकलित नहीं किया जाता वरन् जीवनमूल्यों और जीवन की गुणवत्ता के आधार पर निश्चित किया जाता है।
- ❖ संसाधनों के बाहुल्य के बावजूद सादा जीवन, मितव्ययिता और त्याग पर बल देने वाली सामाजिक मूल्य–व्यवस्था स्थापित होने से 'सत्त्व' वर्धन होगा।
- ❖ केवल राजसत्ता आधारित एक शक्ति–केन्द्री समाज व्यवस्था के स्थान पर समाज आधारित बहुशक्ति–केन्द्री समाज व्यवस्था से 'सत्त्व' वर्धन होगा।

एक सुभाषितकार ने कहा है:

'क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।'

इसका अर्थ यह है कि महान कार्यों की सफलता उसके 'सत्त्व' पर आधारित होती है, उसके उपकरण या साधन पर नहीं। यह 'सत्त्व' क्या है? वह उसकी अन्तस्थ शक्ति (Core Strength), उसका (Essence) है। यदि यह अन्तस्थ शक्ति ठीक है तो बाह्य आक्रमण, मिलावट या परिवर्तन को पचा कर भी वह जीवित रहेगी। यह पाचन शक्ति बनाए रखना, बढ़ाते रहना आवश्यक है। भारत ने, हिन्दू संस्कृति ने, हिन्दू समाज ने लगातार अनेक बाह्य आक्रमण तथा आघात दीर्घकाल तक झेले हैं। इतने दीर्घकाल तक इस प्रकार के आघात लगातार झेल कर कोई भी समाज–संस्कृति बच नहीं पाया है। परन्तु भारत अपने पुत्र रूप हिन्दू समाज के साथ, अपनी अस्मिता समान हिन्दू संस्कृति के साथ अभी भी टिक पाया है। इसलिए कहते हैं कि –

यूनान मिस्र रोमां, सब मिट गए जहां से।

कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी।।

यह जो 'बात' है यह भारत का, हिन्दुत्व का 'सत्त्व' है। यह 'सत्त्व' बनाए रखेंगे, बढ़ाते रहेंगे तो और भी भीषण आघातों को पचा कर भी खड़ा रहने की शक्ति भारत के पास रहेगी। बाह्य आक्रमणों से इसका 'सत्त्व' हरण तथा अन्तर्गत कारणों से 'सत्त्व' क्षरण होता है। इसलिए 'सत्त्व' रक्षण तथा 'सत्त्व' वर्धन करते रहना चाहिए। इस 'सत्त्व' के आधार पर दुनिया भर में भारत की सर्वसमावेशक, सर्वसंवादी तथा सर्वकल्याणकारी विश्वदृष्टि का प्रभाव निर्माण करने हेतु आधारभूमि प्राप्त होगी।

भारत के 'सत्त्व' वर्धन से और शक्तिशाली बनने से हिन्दुओं के 'स्वत्व' रक्षण करने में सहायता मिलेगी जिससे हिन्दू वैश्विक दृष्टिकोण (सत्य) का प्रभाव बढ़ कर विश्व का कल्याण होगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

References:

1. S.K.Chakraborti : Rising Technology and Falling Ethics? ; Journal of Human Values 3:1(1997), P.104
2. Sai Makarand Dave : Sooryani Aamantran Patrika, Arunnu Aagaman(Gujarati),P.16
3. Winin Pereira and Jeremy Seabrook : Global Parasites, Preface
4. Fritjoff Capra : The Web of Life, P.6,7

डॉ. मनमोहन वैद्य,

केशव कुंज, झंडेवाला, देशबन्धु गुप्ता मार्ग,

नई दिल्ली–110055

mmohanv@sancharnet.in

PANCHNAD RESEARCH INSTITUTE,

CHANDIGARH

INTRODUCTION

An honest and tireless pursuit of truth in all its manifestations and all fields of social and national life has been the most valued cultural tradition of India since times immemorial. Questioning incisively and thoroughly every postulate, creed or idea before accepting and adopting it has been the main attribute of our intellectual ethos.

It was no fewer than 108 questions of an inquisitive, eager and doubting Arjuna to Lord Krishna that gifted the humanity with Gita, the greatest book of knowledge. A vast galaxy of great thinkers like Gautam and Gargi, Vishwamitra and Vasishtha, Kanva and Kapila, Yagyavalkya and Patanjali, Mahavir and Buddha, Shankar and Ramanuja, Nanak, Kabir, Dadu, Dayanand, Raman, Ramkrishna and Ram Tirtha, carried forward this great tradition and gave India her distinctive identity, and innate sense of civilizational oneness and pride of nationhood.

Intellectuals play a vital role in leading the country to progress and glory in all vibrant societies. They are not only the harbingers of new thoughts but also help integrate the best in a nation's heritage with modern needs and find apt solutions to contemporary problems.

Unfortunately, for quite some time now, our creative intellect has not only become moribund but also lost its direction. Our intelligentsia is ever willing to accept alien ideas and solutions without demur. Many have made it a habit to scoff at any thing Bhartiya - values, heritage, way of life and even products. Meanwhile sociological, economic and systemic problems threaten to disrupt our national integrity and social fabric. It is imperative to find proper solutions to these problems at the intellectual level - solutions that are in consonance with the country's genius and needs. The intelligentsia can prepare and galvanize the people to face forces that threaten our national unity, territorial integrity and social harmony. It can throw up ideas to fight undesirable foreign influences and onslaughts made in the economic, political and cultural fields in the name of globalization and universalism.

It was against this backdrop that a select group of enlightened intellectuals and professionals from Punjab, Haryana, Himachal, Chandigarh and Delhi held deliberations in several meetings during the year 1983. The group discussed at length the desirability of setting up a platform for a constructive dialogue among various sections of the society. A consensus emerged on the aims, objects and the methodology of the proposed organization that led to the formation of Panchnad Research Institute as a non-profit non-government body dedicated to the service of the motherland. It is registered with the Registrar of Societies, Chandigarh. Justice T.U. Mehta, a former Chief Justice of the Himachal High Court and Shri Shyam Khosla, a senior journalist, were elected its first Chairman and Director respectively. Panchnad has since emerged as a leading forum in the North-West region comprising Delhi, Haryana, Punjab, J&K, Himachal and Chandigarh for free exchange of views and ideas of all hues and persuasions.

Panchnad Research Institute believes in the ideal: Aa no bhadra kratavo yantu vishvatah (Let noble thoughts come to us from all sides). It subscribes to the maxim: Ekam sadvipra bahudha vadanti (Truth is one; the wise tell it in different ways). The method and the spirit of discourse and debate are of paramount importance to the Institute. Shankaracharya characterized the techniques of discussion as Jalpa, Vitandaa and Vaada. In Jalpa, the attempt is to smother opposition by vehement criticism and rejoinders with overbearing arrogance in assertion; and in Vitandaa the aim is to simply destroy the edifice of opponent's arguments even by foul means and methods. Panchnad provides a forum for Vaad for all, irrespective of the nature of their views. The path to ultimate truth can be traversed in various ways. Says the Gita: *Mam vartmnuvartante manushyah parth sarvshah* (My path do men tread in many ways). The Institute has been inviting to its multifarious activities people holding all kinds of views and beliefs to express and discuss them in this noble spirit.

NATURE OF ACTIVITIES

The Institute takes up for debate, study and research issues of contemporary interest as well as those of lasting and fundamental importance to the society. The nature of our studies lies midway between academic research and investigative journalism; an informed discourse and analysis guided by objectivity of approach and scientific methodology maintaining a pace that keeps the results relevant. It undertakes field studies and research on issues that concerns the nation and the society. It holds dialogues between various sections of the society for conflict resolution and organizes training camps for journalists and young men and women aspiring to join the profession in the art, principles and ethics of journalism. It brings out an annual research journal and from time to time publishes books on issues relevant to its work. Besides, its 25-odd Study Centres spread over the entire North-West region regularly hold gosthees, lectures, seminars and symposia. Intellectuals, scholars and experts are invited to initiate discussion on socially relevant issues that is followed by interventions by participants.

INAUGURAL CEREMONY

Panchnad Research Institute was formally launched by Shri Prem Bhatia, Editor-in-Chief of The Tribune group of newspapers, in the presence of a large number of eminent scholars, professionals, journalists and social activists at Chandigarh in 1984. Justice T U Mehta delivered a thought-provoking presidential address to outline the aims and objectives of the Institute. Inaugural ceremony was followed by a national seminar on: Is India a nation or a multi-

national entity? Former Supreme Court judge, Justice H R Khanna presented an inspiring keynote address. Several eminent scholars presented papers at the seminar.

DIALOGUE ON PUNJAB CRISIS

One of the most successful and socially relevant initiatives the Institute took was an in-camera dialogue on Punjab Crisis at Chandigarh in 1986 in which several eminent public figures and scholars from various walks of life participated. Presentation of papers and free and frank exchange of views spread over two days, away from media glare, was more in the nature of introspection than the usual blame game. The focus throughout was on tracing the roots of the Punjab problem and evolving a national consensus to end the alienation of a section of our society. Prominent amongst those who participated were Shri K S Sudershan, Shri Krishan Kant, Sardar Surjit Singh Barnala. Sardar Balwant Singh, Dr Baldev Parkash, Sardar Jagjit Singh Anand, Shri K R Malkani, Shri Prem Kumar, Shri Devinder Swarup, Sardar Maheep Singh, Shri Lajpat Rai, Dr J S Ahluwalia and Shri Naraian Das. Chairman of the Institute, Justice T U Mehta, Director Shri Shyam Khosla and Secretary Shri S P Jain, also participated. Selected papers presented at the dialogue were included in Panchnad Research Journal 1988 with permission from the authors concerned.

FIELD STUDIES

The Panchnad Research Institute conducted a field-study on the 1984 anti-Sikh riots in Delhi. A team comprising Shri Shyam Khosla, Shri Krishan Lal Maini, Dr Sunil Khetrapal and Shri Hemant Vishnoi spent a week in the riot-hit areas to produce a comprehensive report that was published under the title 'Facts Speak for Themselves'. The report was published and widely circulated. It was highly appreciated by all sections of the society.

Dr B L Gupta and Shri Hemant Vishnoi painstakingly studied the phenomenon of Pakistani infiltration in the border areas of Rajasthan. Their report was published and circulated widely. It was later incorporated in the Panchnad Research Journal 1989.

A team comprising two senior journalists Dr N K Trikha and Shri Shyam Khosla and two academics Dr B L Gupta and Dr K S Arya conducted a detailed field study into Christians-Vanvasi clashes in Dangs district of Gujarat in 1999. The team's findings were published in book form and a signed copy of the same was presented to the-then Union Home Minister Shri Lal Krishan Advani. The book was released at a public function in New Delhi by Justice D S Tewatia, former Chief Justice of Calcutta High Court in which a large number of Christian missionaries were also present. It was widely circulated in India and abroad.

Haryana Chapter of Panchnad Research Institute conducted a study of disturbing incidents relating to excesses committed against "Dalits' in Mirchpur village of Hisar district (Haryana) in the year 2010. A team led by Shri R S Sharma, former Editor, Dainik Tribune, and comprising journalists Rishi Saini and Bhupinder Yadav, and academics Dr Dev Vrat Singh and Narender Singh made an in-depth study of the genesis of the problem and nature of excesses committed on deprived sections of the society. The team produced a revealing and perspective report that was duly published and widely distributed. A copy of the report was presented to the Chief Minister of Haryana Shri B S Hooda for his perusal and necessary action.

TRAINING PROGRAMMES

The Institute organized two major training programmes for young journalists and young men and women aspiring to join the profession. The first one was a week long workshop-cum-training camp on "New Trends in News Reporting and Newspaper Production" in collaboration with the Department of Communication Management and Technology of Guru Jambheshwar University, Hisar in 1997 in which 31 budding journalist from Haryana, Punjab and Delhi participated. Veteran editors, journalists, academics and social activists from Delhi, Chandigarh and Haryana were resource persons.

The second training camp on 'Media Writing' was held at Shimla in collaboration with the Department of Journalism and Mass Communication of the Himachal Pradesh University, Shimla in September-October 2002. Twenty-one young journalists from Punjab, Haryana, Himachal and Chandigarh participated in the three-week long camp. It was inaugurated by Himachal Pradesh Governor Shri Suraj Bhan. The emphasis in the camp was to merge media ethics with the news writing and allied professional skills. A number of practical sessions were held. Several eminent editors, senior journalists and renowned academics were invited as resource persons to interact with the trainees. Prominent amongst those who conducted the sessions were Prof. B K Kuthiala, Shri R S Sharma, Prof Vepa Rao, Ms Mohanmeet Khosla, Shri Shyam Khosla, Shri Ashok Malik, Shri Ajay Srivastava, Dr Vir Bala Aggarwal, and Shri R S Pathania.

WORKSHOPS

The Institute organized a two-day workshop on Judicial Reforms at Chandigarh in 2001. More than 40 legal luminaries, academicians and lawyers from Himachal, Punjab, Haryana, Chandigarh and Delhi participated in the workshop. Punjab Chief Minister, Sardar Prakash Singh Badal, inaugurated. Prominent amongst those who presented papers and participated in the workshop included Capt. Kanwaljit Singh, Shri M.L. Sarin, Senior Advocate, Punjab & Haryana High Court, Prof Suresh Kapur of H P University, Dr V K Aggarwal of the Kurukshetra University,

Dr D C Manocha of GND University, Shri T N Razdan, Advocate, Supreme Court of India, Shri Pawan Bansal, MP, Shri Alok Kumar, former Deputy Speaker, Delhi Assembly, Shri Vikas Mahajan, Advocate, Delhi High Court, Dr. K S Arya Academic and Shri Shyam Khosla, Chairman of the Institute.

TALKS

Organizing special talks by eminent persons and experts in various fields is a common feature of Institute's activities. Prominent amongst those who delivered talks on their field of specialization are: Shri K S Sudershan, Dr M M Joshi, Prof. Brahama Challeney, Dr B L Gupta, Prof. Devinder Swaroop, Noted archeologist V S Waknekar, Shri Arun Jaitley, Shri Shanta Kumar, Shri Arif Mohammad Khan, Prof. Brahma Chellany, Shri Dina Nath Batra, Dr. J S Rajput, Dr. J K Bajaj, Shri Rakesh Sinha, Dr. N K Trikha, Shri R S Sharma, Dr. K S Arya, Prof. H S Bedi, Prof. Swadesh Sharma, Shri Vijay Kranti, Prof. B K Kuthiala and Shri Shyam Khosla.

SEMINARS/SYMPOSIA

The Institute has been regularly organizing well-attended and highly applauded seminars on issues of profound national interest. Luminaries from different walks of life have been invited to participate. Some of the notable seminars have been on subjects like Terrorism in Punjab, Relevance of Hindutava, Electoral reforms, Implications of the developments in East Europe (1990), Kashmir problem, Secularism in the Indian context, the Presidential versus Parliamentary forms of government, Supreme Court judgment on Ayodhya, Constitutional and political implications of the Supreme Court orders in the Hawala case, RSS and social change, India-China relation, India a nation or a multi-nation entity?, Minorities - A conceptual study, Politics of reservation, Relevance of pre-election surveys and exit polls, Disaster management, Religious demography of India, Commercialization of education, Distortions in Indian history, Controversy over school text books, Tibet and Indian security, Dr. K Hedgewar and Freedom movement, Indian security scenario, Guru Granth Sahib - A document of Human Welfare, Mahatma's assassination and its aftermath, Credibility & accountability of media, Social harmony, Judicial accountability, Social accountability of medical practitioners, Future of Tibet and Challenges before Hindutva.

Prominent amongst those who participated in these seminars and symposia include Shri A B Vajpayee, Shri L K Advani, Shri I K Gujral, HH the Dalai Lama, Shri Mohan Bhagwat, Justice H R Khanna, Dr Karan Singh, Shri Jaswant Singh, Shri Madhu Dandavate, Justice Rama Jois, Shri M G Vaidya, Shri Bal Apte, Shri Giri Lal Jain, Shri Prem Bhatia, Prof M S Agwani, Shri Nikhil Chakravarty, Shri Khuswant Singh, Dr Bhai Mahavir, Shri Inderjit, Shri Kedar Nath Sahni, Swami Agnivesh, Shri Yagya Dutt Sharma, Shri Prabhash Joshi, Shri J K Bajaj, Justice D V Sehgal, Himachal Governor Suraj Bhan and Dr Shashi.

Panchnad organized two major national seminars in recent years. A well attended national seminar on Combating Terrorism was held at India International Centre in April 2009. Eminent persons including General S K Sinha, Shri Hari Jai Singh, Shri Bharat Karnad, Shri Satish Chandra, Shri Prakash Singh, Shri Ajay Goyal, General Vindo Saighal, Shri Kishore Asthana and Col. Anil Bhatt presented papers in a day-long session. In the interactive session, a large and discerning audience participated in the discussion. The second national seminar on Sri Ram Janmabhoomi - Dispute and Resolution - was held in South Delhi in July 2010. Dr M M Joshi inaugurated and Dr B L Gupta presented the keynote address at the seminar. Eminent jurists M N Krishnamani and Bhupinder Yadav, noted historian Satish Mittal, Archealogist Arun Kumar Sharma, Editor Hari Jai Singh, former Union Minister Arif Mohammed Khan, academicians Dr. Rajneesh Aora and Prof. Swadesh Sharma and former CBI Director Joginder Singh presented papers on various dimensions of the subject. More than 300 intellectuals and concerned citizens, including 150 from all over northern India participated in the two-day seminar.

ESSAY WRITING PROJECTS

The Institute has all along been involving eminent authors and experts to contribute essays and articles for its publications. Prominent among those who contributed essays for Panchnad publications include Dr Murli Manohar Joshi, Justice T U Mehta, Dr Subhash C Kashyap, Shri Praful Goradia, Justice Rama Jois, Shri Francois Gautier, Shri P C Dogra, Shri G V Gupta, Shri M G Vaidya, Shri Hari Jaisingh, Col Anil Bhat (Retd), Shri Prakash Singh, Shri Vijay Kranti, Shri Ashok Malik, Dr Krishan Baweja, Shri Chiranjeev Singh, Dr. Shahsi Bala, Dr Rajneesh Arora, Prof Avyakt Ram Mishra, Prof Satish Mittal, and Shri Jatindra Joshi. The Institute also organized declamation contests and essay writing competitions for school and college students on contemporary issues to mark special occasions in national life. It had also organized Essay writing competition on socially relevant issues as part of Dr. Hedgewar Centenary Celebrations.

❖❖❖

PANCHNAD ANNUAL LECTURES

Holding an annual lecture-series in which an eminent person delivers a series of two lectures on a subject of his/her specialization and experience before a distinguished and discerning audience, is one of the most prestigious activities of the PRI. In order to make the exercise meaningful and participative, members of the audience are invited to ask questions at the end of the talk. The speaker is presented an Abhinandan Patra, a memento and a shawl as mark of respect for his erudition and services to the society.

Started in 1987, Panchnad Lectures have been delivered by the following dignitaries on subjects mentioned against their names:

Sr.	Speaker	Topic	Year
1	S K Sinha Lt Gen (Retd)	Threats to India's security & strategies to meet them	1987
2	Justice D S Tewatia	Centre-State relation	1988
3	Dr M M Joshi	An alternative paradigm - A conceptual formulation	1989
4	Samdong Rinpoche	Tibet - Present scenario and future prospects	1990
5	K N Govindacharya	Nationalism, Secularism, Communalism	1993
6	S Gurumurthy	Swadeshi - A global concept	1994
7	Soli Sorabji	Human Rights & expanding judicial review	1995
8	Justice R S Sarkaria	Federalism in Indian Constitution	1996
9	Justice Kuldeep Singh	Judicial Activism	1997
10	Arun Jaitley	50 years of Indian Constitution - A review	1998
11	Vishnu Kant Shastri	Cultural pollution	2000
12	K P S Gill	Threats to Internal Security	2001
13	Devinder Swarup	Distortions in Indian history	2002
14	S P Gupta	Ayodhya Excavations - The Truth	2003
15	Suresh Soni	Bharat - Challenges and Prospects	2004
16	Subhash C Kashyap	Constitution as an instrument of social change	2005
17	Devinder Swarup	1857 - A Maha Kranti	2006
18	Mohan Bhagwat	Hindu Nationalism - Aaj ke sandharbh mein	
19	General S K Sinha	Internal security - threats from secessionist movements	2009
20	Satish Chandra, IFS (Retd)	Handling Pakistan	2010

ORGANISATIONAL STRUCTURE

A nine-member Steering Committee comprising eminent citizens and professionals, guides the working of the Institute and elects from its members, a Director. An 18-member Governing Body regulates the activities of the Institute and its Study Centres. Chairmen and Secretaries of Panchnad Study Centres are ex-officio members of the Governing Body. The Chairman of the Institute, elected by the Governing Body, and other office bearers have a two-year term co-terminus with that of the Governing Body. Citizens belonging to all hues and persuasions are eligible to become members of the Institute by applying for membership in the prescribed form and paying a membership fee of RS 200 per year. Members and well wishers are also encouraged to contribute Sahyog Rashi to fund studies and research projects.

PANCHNAD PUBLICATIONS

The Institute has brought out the following books/ monographs. The importance of which is evident from their titles and contributors:

1. **Hindu Nationalism - A contemporary perspective**
   Editors: Shyam Khosla and Prof B K Kuthiala. Introduction by Dr B L Gupta.
   Contributors: Dr Murli Manohar Joshi, Justice Rama Jois, Francois Gautier, Praful Goradia, Subhash C Kashyap, Shyam Khosla, Justice T U Mehta, Kishore Asthana, P C Dogra, G V Gupta, IAS (retd), M G Vaidya, Michel Danino, Swadesh Sharma, Prof B K Kuthiala.

2. **Indian Security: Threats and Strategies**
   Editors: Maj Gen Rajendra Nath (Retd) Shyam Khosla, Ashok Malik
   Contributors: Krishan Kant, Lt Gen SK Sinha (Retd) Lt Gen A M Vohra (Retd.), Maj Gen Rajendra Nath (Retd) M L Sondhi, Rajendra Sareen, Pradyot Pradhan, Dr R N Mishra, Dr Dharmendra Goel, Rakesh Kumar Dutta, Lt Col Gautam Sharma and Air Commodore N B Singh.

3. **Electoral System in India**
   Editors: Shyam Khosla and Ashok Malik
   Contributors: L K Advani, Madhu Dandavate, R K Trivedi and Dr N K Trikha

4. **Terrorism in Punjab: A contemporary perspective**
   Editors: Shyam Khosla and Ashok Malik.
   Contributors: Justice H R Khanna, Khushwant Singh, Dev Dutt, K R Malkani, Yagya Dutt Sharma, B M Sinha, Dr Amrik Singh, Dr Baldev Praksh, IK Gujral and Prabhash Joshi

5. **Delhi Riots: Facts Speak for Themselves - A field study**
   Study team comprised Shyam Khosla, Krishan Lal Maini, Hemant Vishnoi and Dr Sunil Khetrapal

6. **Bhatat Ki Samrik Rananiti Ko Bhedne Ka Shadyantra - A field study**
   Study team comprised Dr B L Gupta and Hemant Vishnoi

7. **The True Story of Dangs - A Field study.**
   Study team comprised Shyam Khosla, Dr K S Arya, Dr N K Trikha and Dr B L Gupta

8. **Tathyon ke aine mein - Dang ka ghatnakram - A field study**
   Study team comprised Dr B L Gupta, Shyam Khosla, Dr K S Arya, and Dr N K Trikha

9. **Hindu rashtravad - aaj ke sandharb mein - Shri Mohan Bhagwat**

10. **DALIT UTPEERHAN - MIRCH PUR - A STUDY**
    Study team comprised of Shri R S Sharma, Rishi Saini, Bhupinder Dharmani, Dr. Dev Vrat, Narendra Singh.